विचार बिन्दु

घर का मोह कायरता का दूसरा नाम है। –अज्ञात

सेबी अध्यक्ष माधवी पुरी बुच का मामला आखिर है क्या?

गत कुछ दिनों से सेबी की अध्यक्ष माधवी पूरी बुच का नाम खूब चर्चा में है। इंडियन नेशनल कांग्रेस ने कुछ दिनों पूर्व एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करके सेबी (Stock Exchange Board of India) की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच पर गंभीर आरोप लगाए। यह प्रेस वार्ता कांग्रेस की ओर से पवन खेड़ा द्वारा संबोधित की गई थी। इसके बाद दो-तीन और प्रेस वार्ताएं इस विषय पर की गई हैं।

इससे पहले कि हम माधवी पर लगे आरोपों के बारे में चर्चा करें, इनके बारे में कुछ जानकारी पाठकों को देना उपयुक्त होगा।

माधवी पुरी बुच की शिक्षा मुंबई के फोर्ट कान्वेंट स्कूल दिल्ली के जीसस एंड मेरी कॉन्वेंट और स्टीफेंस कॉलेज में हुई, जहां से इन्होंने गणित में स्नातक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके बाद उन्होंने आईआईएम अहमदाबाद से एमबीए की डिग्री प्राप्त की। यह कहा जा सकता है कि माधवी एक उच्च प्रतिभाशाली महिला हैं। इन्होंने 2007 से 2017 तक आई.सी.आई.सी.आई. में नौकरी की। इसके बाद जुलाई, 2017 से मार्च 2022 तक सेबी की निदेशक एवं मार्च 22 से वे सेबी के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रही हैं।

कांग्रेस ने आरोप लगाया था कि आई सी आई सी आई की नौकरी छोड़कर, सेबी की पूर्ण कालिक निदेशक बनने के बाद भी इन्होंने वहां से लगभग 17 करोड़ रुपए वेतन के रूप में प्राप्त किए जो इनको सेबी से प्राप्त वेतन से कहीं अधिक है। आरोपों के संबंध में माधवी पुरी बुच द्वारा तो अब तक कुछ नहीं कहा गया है किंतु आईसी आई सी आई ने एक स्पष्टीकरण का प्रेस नोट जारी किया कि माधवी पुरी बुच को आईसीसी द्वारा किसी प्रकार का वेतन 2017 के बाद नहीं दिया गया। उन्हें केवल सेवानिवृत्ति लाभ के रूप में ई सोप (Employees" Stock Ownership Plan) दिए गए। इसके अंतर्गत आईसीआईसीआई के शेयर प्राप्त हुए जब-जब इनको बेचा गया तो उनसे प्राप्त राशि इनके टैक्स रिटर्न में दिखाई गई, जिसे कांग्रेस ने वेतन बता दिया था।

सेबी, स्टॉक एक्सचेंज के नियामक का कार्य करता है। वहां पूर्णकालिक निदेशक बनने के बाद भी उन्होंने आईसीआईसीआई के शेयर अपने पास रखे और उनकी घोषणा तक भी नहीं की। यह एक घोर अनियमितता थी। यदि उनके द्वारा ऐसा किया जाता, तो उनका सेबी में बने रहना संभव नहीं था। यह आश्चर्य की बात है कि इस विषय में अभी तक सरकार या सेबी के निदेशक मंडल में से भी किसी ने कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी है।

सामान्यतया, कोई ऐसी संस्था में कोई काम कर रहा होता है, जिसे किसी कंपनी का कोई प्रकरण निर्धारित करने का अधिकार होता है, तो उस व्यक्ति का कंपनी में किसी प्रकार का कोई हित नहीं हो सकता। यदि ऐसा होता है, तो यह 'कनफ्लिक्ट ऑफ इंटरेस्ट' या हितों के टकराव की श्रेणी में आता है। माधवी पुरी बुच के लिए यह स्पष्ट रूप से 'कनफ्लिक्ट ऑफ इंटरेस्ट' का मामला था। इसके बारे में कोई सूचना उनके द्वारा सरकार को नहीं दी गई थी।

भारत सरकार के पूर्व वित्त सचिव सुभाष गर्ग, जो कि 2017 में सेबी के निदेशक मंडल में थे, ने एक टी वी साक्षात्कार में बताया कि माधवी बुच द्वारा इस संबंध में किसी प्रकार की कोई जानकारी सेबी में पद ग्रहण करते समय सरकार या निदेशक मंडल को नहीं दी गई। यदि यह जानकारी उस समय प्राप्त होती, तो वह इस पद को ग्रहण नहीं कर पातीं, न इस पर बने रह सकती थीं।

हिंडेनबर्ग रिपोर्ट में यह भी आरोप लगाया गया है कि माधवी पुरी का अडानी की एक ऐसी कंपनी में निवेश था, जिसकी जांच सुप्रीम कोर्ट के आदेशों पर सेबी द्वारा की जा रही थी। सेबी द्वारा उस कंपनी की जांच की जा रही थी जिसमें उसकी अध्यक्ष माधवी पुरी बुच का हित निहित था।

इस बारे में सेबी के निदेशक मंडल या इसके किसी भी सदस्य के द्वारा कोई स्पष्टीकरण अथवा प्रेस नोट जारी नहीं किया जाना, आश्चर्यजनक है। कुछ वर्ष पूर्व जब आईसीआईसीआई की पूर्व अध्यक्ष चंदा कोचर के विरुद्ध कुछ आरोप लगे तो वे अपने पद से अलग हुई और वहां के निदेशक मंडल ने उन पर एक जांच कमेटी नियुक्त की, जिसने आरोपों को सही माना। परिणामस्वरूप, उन्हें न केवल अपना पद छोड़ना पड़ा बल्कि उनके ऊपर आपराधिक प्रकरण भी दर्ज हुआ।

आई सी आई सी आई द्वारा जारी प्रेस नोट के अनुसार यह मान भी लिया जाए कि माधवी पुरी बुच ने कोई वेतन आई सी आई सी आई की नौकरी छोड़ने के बाद नहीं लिया, तब भी यह सत्य है कि उन्होंने वहां के शेयर अपने पास रखे। सेबी की अध्यक्ष के नाते उनके पास यह विशेष अधिकार था कि उनके पास किसी भी कंपनी के शेयर के संबंध में अप्रकाशित जानकारी हो सकती थी। यह वैसा ही हुआ जैसे किसी न्यायाधीश के पास कोई मुकदमा चल रहा हो और उसका हित किसी एक पक्ष से जुड़ा हुआ हो तो उससे न्याय की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

होना तो यह चाहिए था कि आरोप लगते ही सेबी के निदेशक मंडल द्वारा तत्काल एक जांच समिति गठित कर दी जाती और जो भी आरोप उन पर लगे हैं, उनके बारे में विस्तृत जांच की जानी चाहिए थी। ऐसा न किए जाने से यह धारणा पुष्ट होती है कि सरकार एवं सेबी के निदेशक मंडल और स्वयं माधवी पुरी बुच के पास छुपाने के लिए बहुत कुछ है।

किसी निजी कंपनी से सरकारी संस्था में कार्यभार संभालने के पहले संबंधित व्यक्ति को अपने सारे शेयर बेच देने चाहिए थे, अथवा उसके संबंध में पूरी जानकारी नई संस्था के साथ-साथ सरकार को भी देनी चाहिए थी। पाठकों के लिए जानना दिलचस्प होगा कि आई सी आई सी आई के शेयर उसके सेवा निवृत्त कर्मचारियों /अधिकारियों द्वारा सेवा निवृत्ति के पांच वर्ष बाद तक भुनाए जा सकते थे। माधवी पुरी बुच ने आठ वर्ष तक इन्हें अपने पास रखा और बाद में इन्हें बेचा और बहुत लाभ कमाया।

सामान्यतया, छोटे से 'कनफ्लिक्ट ऑफ इंटरेस्ट' या हितों के टकराव के प्रकरण में भी अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई हो जाती है। यहां स्वयं सेबी अध्यक्ष उस कंपनी के शेयर अपने पास रखी हुई थी, जिसके प्रकरण पर निर्णय करने का अधिकार उनके पास था।

होना तो यह चाहिए था कि आरोप लगते ही सेबी के निदेशक मंडल द्वारा तत्काल एक जांच समिति गठित कर दी जाती और जो भी आरोप उन पर लगे हैं, उनके बारे में विस्तृत जांच की जानी चाहिए थी। ऐसा न किए जाने से यह धारणा पुष्ट होती है कि सरकार एवं सेबी के निदेशक मंडल और स्वयं माधवी पुरी बुच के पास छुपाने के लिए बहुत कुछ है।

सेबी एक नियामक संस्था है। सेबी ने कई बार यह कहा कि किसी भी कंपनी के द्वारा गलत काम किए जाने पर उसका अध्यक्ष ही जिम्मेदार नहीं होता बल्कि उसके निदेशक मंडल की भी जिम्मेदारी बनती है। इस दृष्टि से देखा जाए तो सेबी के निदेशक एवं अध्यक्ष पद पर माधवी पुरी बुच के बने रहने और उनके द्वारा आई सी आई सी आई के शेयर अपने पास बनाए रखने की जानकारी सामने आने के बावजूद उनके विरुद्ध कोई जांच नहीं करना, मिली भगत का ही उदाहरण कहा जाएगा।

यह उल्लेखनीय है कि माधवी बुच, निजी कंपनी से सीधे सरकार की नियामक संस्था सेबी में नियुक्त हुई थी। उनकी नियुक्ति करने वाली समिति में केवल दो ही सदस्य थे– प्रधानमंत्री और गृहमंत्री। क्या उन लोगों के ध्यान में यह नहीं लाया गया कि माधवी बुच की संपत्ति क्या है एवं कहां-कहां उनके शेयर हैं? ऐसा नहीं है कि पूर्व में निजी क्षेत्र कंपनियों के विशेषज्ञों को सरकारी संस्थानों में नहीं लगाया गया हो, किंतु इस प्रकार के अनैतिक कार्य करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध जांच न करने के मामले सामने नहीं आए हैं।

यह नियम भी अभी तक नहीं बनाया गया है कि किसी भी निजी कंपनी को छोड़ने वाला व्यक्ति अधिकतम तीन माह से अधिक, उस कंपनी के शेयर अपने पास नहीं रख सकता। निजी कंपनी का व्यक्ति जब सरकार में सेबी जैसी संस्थान में आता है तो वह निजी कंपनियों के शेयर को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। माधवी पुरी के मामले में तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि उन्हें उपलब्ध विशेष जानकारी के कारण ही, उनके द्वारा रखे गए शेयर का भाव बहुत बढ़ गया जिसका लाभ उन्हें मिला।

इस प्रकार के नियमों में कोई बदलाव शायद इसलिए नहीं किया गया कि कई आईएएस अधिकारियों के पास भी कई प्रकार के शेयर होते हैं और वे नियामक संस्थाओं में लग जाते हैं। यदि ऐसा नियम बना दिया जाता तो वे ऐसा नहीं कर पाते। उनके स्वार्थ वश ही निर्देशों को सही नहीं किया गया है। इस प्रकार की अपारदर्शी व्यवस्था जनता के साथ में धोखा ही कहा जाएगा, क्योंकि कुल मिलाकर एक साधारण निवेदक को इससे नुकसान पहुंचने की संभावना बनी रहती है।

माधवी पुरी बुच पर व्होकार्ट कंपनी को अपना मकान बहुत अधिक किराए पर देने का आरोप भी है। जो मकान 7 लाख रुपए में 2018-19 में किराए पर दिया था, वह 2023-24 में बढ़कर 45 लाख हो गया।

इस पूरे प्रकरण में सरकार की चुप्पी भी समझ से परे है। इनकी नियुक्ति प्रधानमंत्री और गृहमंत्री द्वारा की गई थी। उनकी चुप्पी से ऐसा लगता है कि माधवी पुरी बुच को अभयदान मिला है। इसी कारण उन्होंने अब तक त्यागपत्र नहीं दिया है।

अब इस मामले का संज्ञान, संसद की जन लेखा समिति ने लिया है। उल्लेखनीय है कि जन लेखा समिति के अध्यक्ष, कांग्रेस के नेता के सी वेणु गोपाल हैं और अन्य सदस्य, विभिन्न दलों के हैं। इस समिति को अधिकार है कि वह सेबी की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच को बुलाकर उनके बयान ले सके। यदि थोड़ी बहुत भी नैतिकता सेबी अध्यक्ष में बची है तो उन्हें तत्काल अपने पद से त्यागपत्र देना चाहिए और अपने आप को जांच के लिए प्रस्तुत करना चाहिए। जनता की गाढ़ी पसीने की कमाई और निवेशकों के द्वारा किए गए निवेश की राशि का इस प्रकार से दुरुपयोग होना ईमानदार एवं शुचिता वाली सरकार के लिए ठीक नहीं है। आई ए एस लाबी भी संभवतया इस बारे में विशेष कुछ नहीं कर रही है क्योंकि वे स्वयं भी इससे प्रभावित होते हैं।

केवल यह कह देना कि सारे काम कानून और नियमों के अनुसार हुए हैं, माधवी पुरी बुच एवं सरकार को निर्दोष सिद्ध नहीं करते। यह सामान्य जानकारी है कि अधिकांश भ्रष्टाचार के कारनामे, कानून और नियमों का तकनीकी रूप से पालन करते हुए ही किए जाते हैं। कई बार ऐसा होता है कि कानूनी रूप से एवं तकनीक रूप से सही होते हुए भी, गंभीर भ्रष्टाचार किसी स्थिति में हुआ हो। बड़े महत्वपूर्ण पदों पर बैठे व्यक्तियों से आदर्श नैतिक आचरण की अपेक्षा की जाती है।

अब तो जन लेखा समिति की जांच से ही वस्तुस्थिति सामने आ पाएगी। तब तक माधवी पुरी बुच सरकार के अभयदान से सेबी की अध्यक्ष बनी रहेंगी, ऐसा लगता है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का चिनार बुक पुस्तक महोत्सव

कश्मीरी युवाओं की सोच से जुड़ा पुस्तक पर्व

डॉ. अरुणा व्यास

कश्मीर के युवा रचनात्मक आयामों से जुड़ने को तेजी से उत्सुक हुए हैं। उनकी सोच बदलने, उनमें राष्ट्र प्रेम की दृष्टि जगाने की दृष्टि से नेशनल बुक ट्रस्ट ने इधर महत्वपूर्ण पहल की है। इसके तहत शेर-ए-कश्मीर अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर (एसकेआईसीसी) में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने 9 दिन का चिनार बुक पुस्तक महोत्सव आयोजित किया।

हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी, डोगरी, और अंग्रेजी आदि भाषाओं के प्रकाशकों का यह अनूठा मेला था। ऐसा जिसमें लेखकों, कवियों, और कलाकारों की भी महती भागीदारी रही। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक कर्नल युवराज मलिक की सुनियोजित सोच से आयोजित यह देशभर का अनूठा पुस्तक पर्व था। कर्नल युवराज कश्मीर पदस्थापित रहे हैं। साहित्य और संस्कृति से भी उनका निकट का नाता है। वह स्वयं लिखते हैं, इसलिए कश्मीर के युवाओं को पुस्तक संस्कृति से जोड़ने और इस बहाने देश से अलग-थलग पड़ी कश्मीर घाटी में सकारात्मक परिवर्तन की दृष्टि से चिनार पुस्तक पर्वोत्सव बहुत महत्वपूर्ण रहा।

यह पुस्तक महोत्सव ठहरे पानी को चलायमान करते, उसे जीवंत करने का एक तरह से प्रयास था। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने एक पहल इससे यह भी की कि इसके जरिए वहां के युवाओं को एक दिशा दी। जो हाथ स्थानीय पुलिस, मिलट्री को पत्थर मारने के लिए उठते थे, उनके हाथों में पुस्तक देने की दृष्टि से, उनकी सोच को बदलने की दृष्टि से और युवाओं को यह अहसास कराने के लिहाज से भी कि यदि उन्हें अपनेपन का अहसास कराया जाए तो उनकी सोच को बदला जा सकता है। उनमें अपने देश भारत के प्रति प्यार जगाया जा सकता है।

नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक युवराज मलिक की पहल पर इसके तहत ही वहां बहुत सी गतिविधियां इस उद्देश्य से रखी गयी। मसलन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद की ओर से कश्मीर के इतिहास और वहां की संस्कृति में समाए देश के गौरव से जुड़े महत्वपूर्ण घटनाक्रम की महत्वपूर्ण शब्द-छायाचित्र-प्रदर्शनी का वहां आयोजन किया गया। प्रतिदिन हजारों युवाओं ने इसे देखा-समझा। संप्रभुता और समान नागरिक संहिता के साथ अनेकता में एकता की भारतीय संस्कृति से जुड़े भारतीय संविधान के आलोक में भी एक प्रदर्शनी आयाजित हुई। इसमें संविधान निर्माण में महिलाओं की भूमिका को केन्द्र में रखा गया। इसी तरह अंतरिक्ष में भारत की उपलब्धियां और राष्ट्र गौरव से जुड़ी सोच को युवाओं से वहां साझा किया गया। पुस्तक-संस्कृति के बहाने चिनार पुस्तक महोत्सव में अलग-थलग पड़े कश्मीर और वहां के युवाओं को पुस्तकों से, भारतीय संस्कृति के सरोकारों से जोड़ने की सूझ रही है। पुस्तक महोत्सव डल झील के ठीक किनारे आयोजित हुआ। चिनार बुक फेस्टिवल पहला राष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव था जिसमें किताबों के बीच पाठक साहित्य, कला और संस्कृति से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों से भी जुड़े। महोत्सव में प्रतिदिन सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक बच्चों के लिए सुलेख, कहानी सुनाना, कैरिकेचर, रंगाई प्रतियोगिता, कला कार्यशाला, नारा लेखन प्रतियोगिता, कठपुतली शिल्प, वैदिक गणित और कई अन्य रचनात्मक लेखन कार्यशालाएं आयोजित हुई। इसके बाद प्रतिदिन 2 बजे से शाम 4 बजे तक युवाओं के लिए करियर ओरिएंटेड वर्कशॉप, कला, साहित्य और संस्कृति पर बड़े साहित्यकारों से संवाद कार्यसक्रम हुए और विभिन्न सांस्कृतियां प्रस्तुतियां भी बड़ा आकर्षण रही। इसका गहरा असर भी युवाओं हुआ। एक उत्सवधर्मिता का माहौल वहां बना। इसीलिए महोत्सव के आरंभ में ही इन आकर्षणों के चलते एक लाख के करीब बच्चों ने बाकायदा मेले के लिए पंजीकरण कराया। नौ दिवसीय आयोजन में प्रतिदिन युवाओं ने साहित्य और भारतीय संस्कृति से जुड़े ख्यात विख्यात साहित्यकारों से प्रत्यक्ष संवाद किया। भारतीय संस्कृति और सनातन भारतीय दृष्टि को जाना-समझा। नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक बताया, कश्मीर पुस्तक पर्व उर्दू साहित्य का भी अब तक का सबसे बड़ा पुस्तक महोत्सव साबित हुआ। प्रतिदिन हजारों की संख्या में युवाओं की भागीदारी उत्साह जगाने वाली थी। चिनार पुस्तक महोत्सव में 200 से ज्यादा प्रकाशकों ने भाग लिया। जम्मू-कश्मीर के युवा लेखकों के सम्मान के साथ उनके लेखकीय सरोकारों को भी निरंतर उत्साहित किया गया।

पुसतक महोत्सव में कश्मीरी सूफीवाद, भाषा, इतिहास और संस्कृति जैसे विषयों पर चर्चाएं काफी उत्साहजनक रही तो कविता सत्रों में भी युवाओं की बड़ी भागीदारी रही। कश्मीरी बाल साहित्यकार अख्तर हुसैन से जब बच्चों ने कश्मीरी जुबां में कहानियाँ सुनी तो उन्होंने भी बहुत कुछ अनुभव साझा किए। हुर्रियत अध्यक्ष मीरवाइज उमर फारूक, घाटी में युवा आंदोलन से जुड़े बहुत से कार्यकर्ताओं ने इसमें शिरकत कर पुस्तक संस्कृति के लिए की गयी पहल को सराहा। साहित्य और सांस्कृतिक विरासत के साथ कश्मीर में हुई यह हलचल महती पहल रही। आजादी के बाद कश्मीर में पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने का यह पहला ऐसा कार्यक्रम कहा जा सकता है जिसने युवाओं को का नई दिशा देने का कार्य किया है।

–डॉ. अरुणा व्यास,
लेखिका स्वतंत्र पत्रकार
एवं लेखक हैं

चारभुजा बड़ा मंदिर के भंडार से निकले 89,297 रुपए व 1 ग्राम सोना

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा का प्रमुख बड़ा मंदिर श्री माहेश्वरी समाज श्री चारभुजा जी मंदिर ट्रस्ट के आज सोमवार को खोले गए भंडार से 89297 रुपए नगद एवं 1 ग्राम सोना प्राप्त हुआ

ट्रस्ट के अध्यक्ष उदयलाल समदानी ने बताया कि मंदिर के आज खोले गए दान पत्र से 89297 नगद एवं 1 ग्राम सोना निकला है।

ट्रस्ट मीडिया प्रभारी महावीर समदानी ने जानकारी देते हुए बताया कि भंडार की गिनती के समय ट्रस्ट के अध्यक्ष उदयलाल समदानी मंत्री छीतरमल डाड, कोषाध्यक्ष सुनील सोनी, संरक्षक रामेश्वर तोषनीवाल ,चंद्रसिह तोषनीवाल ,बद्रीलाल डाड, रमेश जागेटिया, प्रमोद डाड आदि ने गिनती की दान पात्र से निकले हुए नगद एवं सोने की इंद्राज ट्रस्ट के रजिस्टर में एंट्री कर जमा किए गए।

पाली जिले का सरदार समंद बांध 45 वर्ष बाद ओवरफ्लो

पाली, (नि.सं.)। पश्चिम राजस्थान वह पाली जिले का दूसरा बड़ा बांध सरदार समंद बांध करीब 45 वर्ष बाद ओवरफ्लो हुआ, जिससे इसके कमांड क्षेत्र के किसानों के चेहरे खिल गए। 1979 के बाद पहली बार बाध में पूरा भर जाने के बाद ओवरफ्लो हुआ।

इसके कमांड क्षेत्र में छोटे-मोटे एनिकट बन जाने के इस बांध में 17 18 फुट से ज्यादा पानी नहीं आता था। इस बार लगातार बारिश से बांध पूरा भर गया, जिसके कारण 10 गांव को अलर्ट कर दिया गया। इसका पानी सिंचाई के काम आता है। इस बांध का निर्माण जोधपुर रियासत के महाराजा सरदार सिंह ने बनाया था जिस कारण इसका नाम सरदार समंद पड़ा।1933 में जोधपुर महाराजा महाराज उम्मेद सिंह ने यहां पर कोठी बनाई थी जो कि वर्तमान में हेरिटेज होटल के रूप में काम कर रही ह। बांध ओवरफ्लो होने के कारण किसानों के चेहरे खिल गए हैं और उन्हें खेती के लिए पर्याप्त पानी मिलेगा। बंद और प्ले होने की सूचना पर कई अधिकारियों के साथ जिला कलेक्टर व एसपी भी पहुंचे। वही जवाई बांध 43 फीट पर हो चुका है, जिले के एक दर्जन बांध पूरे भर गए हैं।

बांध 43 फीट पर हो चुका है, जिले के एक दर्जन बांध पूरे भर गए हैं।

शहीद विजय कुमार का देह पंचतत्व में विलीन, सैनिक सम्मान से किया अंतिम संस्कार

तारानगर, (कासं)। तारानगर तहसील के गांव ढाणी आशा के 28 वर्षीय विजय कुमार धीनवाल का सोमवार दोपहर गांव में गमगीन माहौल में सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार हुआ। इससे पहले सोमवार सुबह शहीद का पार्थिव तारानगर पहुंचा। जहां गांव के युवाओं ने तिरंगा यात्रा के साथ शहीद के पार्थिव देह को गांव तक लेकर पहुंचे। युवाओं ने "जब तक सूरज चांद रहेगा विजय भाई तेरा नाम रहेगा" के नारे गूंजायमान हो गये। शहीद के अंतिम दर्शन के लिए लोगों का हुजूम उमड पडा।

शहीद का पार्थिव देह उसके घर पहुंचा तो माहौल गमगीन हो गया। बूढ़ पिता की आंखे पथरा गयी थी वहीं शहीद वीरांगना पति के शहीद होने की सूचना मिलने के साथ बेसुध हो रही थी। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी लेफटीनेंट कर्नल दिलीप सिंह ने बताया कि 28 वर्षीय शहीद विजय कुमार धीनवाल भारतीय नेवी में थे। जो महाराष्ट्र के बेलगांव में कमांडो ट्रैनिंग कर रहे थे। सात सितम्बर की सुबह बेलगांव में ट्रेनिंग के दौरान उनकी नाव नदी में डूब गयी। जिससे वह वीरगति को प्राप्त हो गये। विशेष विमान से शहीद का शव का रविवार शाम दिल्ली लाया गया। जहां सड़क मार्ग से सोमवार सुबह शव तारानगर पहुंचा। जहां से गांव के युवाओं के द्वारा तिरंगा यात्रा निकालकर गांव के लाडले को अंतिम विदाई दी। उन्होंने बताया कि विजय कुमार की एक साल पहले शादी हुई थी। गांव ढाणी आशा में सैनिक सम्मान के साथ शहीद विजय कुमार का अंतिम संस्कार किया गया है। लोकसभा सासंद राहुल कस्वां, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़, प्रधान संजय कस्वां, एडीएम उत्तम सिंह, तहसीलदार इमरान खान, विकास अधिकारी अमरजीत सिंह बाबल, उप पुलिस अधिक्षक मिनाक्षी, महावीर पूनियाँ, राकेश जांगिड़, मुंशी खाँ तेली, थानाधिकारी गौरव खिडिया सहित प्रशासनिक अधिकारी व जन प्रतिनिधियों ने पुष्प चक्र अर्पित कर शहीद विजय सिंह को श्रद्धांजलि दी। गांव ढाणी आशा के शीशपाल धीनवाल ने बताया कि शहीद विजय कुमार धीनवाल को मुखाग्नी उसके 15 माह के बेटे लक्षित ने दी है।

पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि देते पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़।

- पैतृक गाँव ढाणी आशा में हुआ अंतिम संस्कार, शहीद के बेटे ने दी मुखाग्नि

राशिफल मंगलवार 10 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, अनुराधा नक्षत्र रात्रि 8:04 तक, विष्कुमभ योग रात्रि 12:31 तक, गर करण दिन 10:33 तक, चन्द्रमा वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से रात्रि 8:04 तक है। भद्रा रात्रि 11:12 से आरम्भ होगी। आज मुक्ता भरण सप्तमी, सन्तान और दुबड़ी सप्तशी, ललिता सप्तमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:19 से 10:51 तक, लाभ-अमृत 10:51 से 1:56 तक, शुभ 3:29 से 5:01 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:34

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है।

धनु
परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है।

मकर
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा हो सकते हैं। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। स्वास्थ्य में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा है।